हिन्दी विभाग

स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध

पत्र सं० – 10

कामायनी में मिथक, इतिहास और कल्पना का प्रयोग

प्रसाद इतिहास एवं मिथकों का अध्येता रहे हैं और उनमें अपनी कल्पना का सर्जनात्मक संश्लेषण कर के उन्होंने अपनी कविताओं का ढाँचा खड़ा किया है जिस प्रकार उसके सभी नाटक इतिहास और कल्पना के योग से बने हैं वैसे ही कामायनी में इतिहास, मिथक और कल्पना घुले-मिले हुए हैं। प्रसाद इतिहास और मिथक का उपयोग यूँ ही नहीं करते। उसके पीछे गहरा अनुसंधान है जो उनकी नाटकों की भूमिकाओं या कल्पनाओं के आमुख में झलकता है। कामायनी का अध्ययन करते हुए पाठक की सहज ही जिज्ञासा होती है कि इस कथानक में कौन से वस्तु इतिहास के हैं और कौन से मिथक के तथा कौन से कल्पना के।

प्रसाद ने इतिहास और मिथक में अस्पष्ट अन्तर किया है जिन प्रसंगों के मात्र के इतिहासकार मिथक के रूप में देखते हैं प्रसाद ने उनमें से कुछ को इतिहास का दर्जा दिया है जैसे - देव सभ्यता के ध्वंस

।

है बाद आदि पुरुष मनु और आदि स्त्री श्रद्धा के संयोग से मानव सभ्यता के विकास का प्रसंग अपनी मूल प्रकृति में ही मिथक है, इतिहास नहीं। प्रसाद इसे इतिहास के रूप में देखते हैं और आमुख में लिखते हैं- आर्य साहित्य में मानवों के आदि पुरुष मनु का इतिहास वेदों से लेकर पुराण और इतिहासों में बिखरा हुआ मिलता है वैवस्त मनु को ऐतिहासिक पुरुष मानना ही उचित है जलप्लावन भारतीय इतिहास में प्राचीन घटना है यह इतिहास ही है मनु भारतीय इतिहास के आदि पुरुष हैं राम, कृष्ण, बुद्ध इन्हीं के वंशज हैं प्रसाद ने ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण, छान्दोग्य उपनिषद तथा कई पुराणों को आधार बनाते हुए कामायनी का कथानक तैयार किया गया है चूँकि वे सभी ग्रंथों को इतिहास का दर्जा देते हैं

(क) कामायनी की कथा का पहला प्रलय प्रसंग है जिसमें मनु बच जाते हैं प्रसाद ने यह प्रसंग 'शतपथ ब्राह्मण' से लिया है। लगभग यही प्रसंग 'बाइबिल' में हजरत नूह की कथा के रूप में विद्यमान है

प्रसाद ने 'शतपथ ब्राह्मण' को आधार बनाकर यह संकेत किया है कि एक मत्स्य के कारण मनु की रक्षा हुई किन्तु वह पौराणिक कथा छोड़ दी है कि जिस मत्स्य पर प्रजापति ने उपकार किया था उसी ने प्रलय में उनकी रक्षा की ।

(ख) जहाँ तक मनु तथा श्रद्धा के संयोग तथा मानव के जन्म का प्रसंग है, यह कथा भारतीय मिथकों में स्पष्टतः उल्लिखित है । ऋग्वेद में संदर्भ आता है कि श्रद्धा काम-गोत्र की बाला थी और ऋषियों के सर्ग में समादृत थी । 'कामोगोत्रजा (कामगोत्रजा) श्रद्धा नामर्षिका' । इसी प्रकार आकुलि-किलात की सहजता से यज्ञ करने का संदर्भ भी वैदिक साहित्य में उपलब्ध है जिसे प्रसाद ने कामायनी में स्वीकार किया है।

(ग) कामायनी का तीसरा महत्वपूर्ण प्रसंग मनु-इड़ा मिलन और सारस्वत नगर का आख्यान है यह अंशतः मिथकों से लिया गया है, और अंशतः कल्पनाओं से निर्मित है। इड़ा का संदर्भ वेदों तथा शतपथ ब्राह्मण में मिलता है। वैदिक साहित्य में उसे मनुष्यों की शासिका मनु की पथप्रदर्शिका और हितैषी

स्वभाव वाली बताया गया है। प्रसाद ने भी इच्छा लगभग इसी रूप में स्वीकार की है। किन्तु शतपथ ब्राह्मण में संकेत है कि इड़ा मनु की पुत्री थी वहाँ यह भी संकेत है कि मनु ने इड़ा के प्रति अपराध किया है और इस कारण देवता मनु से नाराज हो गये थे क्योंकि इड़ा देवताओं की बहन थी। प्रसाद ने ये दोनों तथ्य इस प्रकार नहीं रखे। यदि वे इड़ा को मनु की पुत्री दिखाते तो संभवतः मनु का अपराध अक्षम्य होता है उन्होंने इसका हल्का सा संकेत करके छोड़ दिया है 'अरे आत्मजा प्रजा! पाप की परिभाषा बन शाप उठी।"

स्पष्ट है कि कामायनी मिथक और कल्पना के सूक्ष्म संश्लेषण से निर्मित काव्यकृति है। मिथकों का गहन अनुसंधान करते हुए प्रसाद ने इनमें कल्पना का उतना ही निवेश किया जितना मिथकों के प्रभाव को बनाए रखते हुए संभव था।

प्रस्तुतकर्त्ता
बैनाम कुमार
हिन्दी विभाग
राजा नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 829222104

दिनांक
04/11/2020